Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat
دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक 16.09.16 बैतुल फ़तूह, लंदन।

अज़ीज़म रज़ा सलीम, जामिअः पास करने से पहले उत्तम मुरब्बी और उत्तम मुबल्लिग़ था तथा ख़िलाफ़त के लिए अत्यधिक स्वाभिमानी था। अल्लाह तआला दुनया के जामिओं के समस्त विद्यार्थियों को यह सामर्थ्य प्रदान करे कि वे भी निष्ठा एंव श्रद्धा में बढ़ने वाले हों और दायित्वों को निभाने वाले हों। विनम्रता, सुशीलता, दीन का स्वाभिमान, ख़िलाफ़त से सम्बंध तथा प्रेम, मेहमान दारी, भावनाओं का आदर, ये उसके विशेष गुण थे। ऐसे लोग आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथनानुसार उन लोगों में शामिल होते हैं जिन के लिए जन्नत अनिवार्य हो जाती है। जामिअः अहमदियः यू. के. के एक होनहार विद्यार्थी प्रिय रज़ा सलीम के निधन पर उनके सद्‌गुणों का ईमान वर्धक वर्णन।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

प्रत्येक इंसान जो दुनया में आता है एक दिन उसे जाना है, कोई चीज़ भी सदा के लिए नहीं है। कुछ आरम्भिक बचपन में ही अल्लाह तआला के पास चले जाते हैं। कुछ बड़ी आयु में तथा कुछ लोग अपनी आयु के अन्तिम छोर तक पहुंचते हैं। कुछ अस्तित्व ऐसे होते हैं जिनके पास इस दुनया से जाने पर शोक करने वालों की परिधि बड़ी विस्तृत होती है और यदि ऐसा कोई पसन्दीदः व्यक्तित्व, युवा अवस्था में तथा सहसा चला जाए तो दुःख और शोक बहुत बढ़ जाता है। परन्तु अल्लाह तआला ने हमें प्रत्येक दुःख, कठिनाई, खेद एंव शोक के समय अपनी इच्छा पर संतोष करते हुए, इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन की दुआ सिखाई है अर्थात, हम अल्लाह तआला के ही हैं तथा उसी की ओर लौटाए जाने वाले हैं और जब इस संसार से विदा होने वाले के निकट सम्बंधी अत्यधिक संतोष की अभिव्यक्ति करते हैं, यह दुआ पढ़ते हैं, तो फिर अल्लाह तआला जहाँ मरहूम के दर्जे बुलन्द करता है वहीं पीछे रहने वालों की संतुष्टि के सामान भी पैदा फ़रमाता है।

पिछले दिनों हमारे एक बहुत ही प्यारे अज़ीज़, जामिअः अहमदियः के विद्यार्थी की एक दुर्घटना में बीस वर्ष की आयु में मृत्यु हुई, इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। एक अज़ीज़ ने मुझे बताया कि उनके दोस्त अपनी पत्नि के साथ सूचना मिलने के दो घन्टे के भीतर ही मरहूम के वालिदैन के पास खेद प्रकट करने के लिए गए, तो कहते हैं कि मेरी पत्नि आश्चर्य चकित रह गईं जब प्रिय मरहूम की वालिदा ने कहा कि वह मेरा बहुत ही प्यार बेटा था परन्तु उसको बुलाने वाला उससे भी प्यारा है। यह है वह मोमिनाना शान का उत्तर जो हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मानने वालों में नज़र आता है। कोई चींख़ना चिल्लाना नहीं, हाँ खेद होता है, इंसान रोता भी है, शोक की चरम सीमा भी होती है और माँ से बढ़कर किसको जवान बच्चे के शोक का आभास हो सकता है, उससे अधिक किसको सदमा हो सकता है अथवा बाप से अधिक किसको अपने जवान बच्चे के निधन का आभास हो सकता है। बाप के विषय में मुझे यही बताया गया कि दुर्घटना की सूचना मिलते ही अत्यंत शोक की अवस्था में थे परन्तु जब निधन की सूचना मिली तो इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन पढ़ा और शांत हो गए।

अतः यही मामिनों वाली वास्तविक शान है। जवान बच्चे की अचानक मृत्यु को इतनी जल्दी भुलाया तो नहीं जा सकता परन्तु एक मोमिन अपने दुःख अल्लाह तआला के समक्ष होकर बयान करता है। रोता भी है, मन की शांति और दर्जों की बुलन्दी की दुआ भी करता है। मैं जर्मनी की यात्रा पर था, यात्रा से वापसी उस दिन हुई थी। यात्रा आरम्भ करने से पहले ही मुझे सूचना

मिली कि दुर्घटना हो गई है और फिर रास्ते में निधन की सूचना भी मिली। प्यारे बच्चे का चेहरा बार बार मेरे सामने आता रहा, दुआ की तौफ़ीक़ भी मिलती रही। बड़ा ही प्यारा बच्चा था। जामिअः अहमदियः के बच्चे क्यूँकि निरन्तर मुझसे मिलते रहते हैं इस लिए उनके साथ, प्रत्येक के साथ एक व्यक्तिगत सम्बंध भी है तथा परिचय भी है। मुलाक़ात के समय यदि मेरे पास कुछ समय हो तो सवाल व जवाब भी कर लेते हैं। इस बच्चे के साथ जब मेरी अन्तिम भेंट हुई तो कुछ प्रश्न उसके दिल में थे। उसके उत्तर में कुछ समय लगा। बड़े विस्तार से उसको बताया मैंने। मुझे तो यह उसके वालिद के कहने पर याद आया कि इस मुलाक़ात के बाद अज़ीज़ रज़ा बहुत ख़ुश था कि आज न्यूनाधिक पन्द्रह सोलह मिन्ट की भेंट में मेरे प्रश्नों का विस्तार पूर्वक उत्तर मुझे मिला। सदैव उसकी आँखों में ख़िलाफ़त के लिए एक विशेष स्नेह तथा चमक होती थी। अज़ीज़ जब जामिअः में दाख़िल हुआ है तो मेरा विचार था कि सम्भवतः खेल कूद में अधिक रूचि हो परन्तु इस बच्चे ने मेरे अनुमान को बिल्कुल ग़लत साबित कर दिया। पढ़ाई में भी होशियार निकला, निःसन्देह खेलों में भी रूचि थी और श्रद्धा तथा आज्ञा पालन में भी बहुत बढ़ा हुआ था। एक भावना थी कि ख़िलाफ़त और दीन की सुरक्षा के लिए मैं नंगी तलवार बन जाऊँ और जैसा कि कुछ हालात उसके दोस्तों ने लिक्खे हैं, उसने यह करके भी दिखाया। असंख्य लिखने वाले उसके दोस्तों ने, उसके क्लास फ़ैलो ने, जामिअः के विद्यार्थियों ने, बहन भाई तथा माता-पिता ने मुझसे उसकी विशेषताओं का वर्णन किया। एक बात तो लगभग सभी ने लिक्खी कि विनम्रता, सुशीलता, दीन का स्वाभिमान, ख़िलाफ़त से सम्बंध तथा प्रेम, मेहमानदारी, भावनाओं का आदर, ये उसके विशेष गुण थे ऐसे लोग आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथनानुसार उन लोगों में शामिल होते हैं जिन के लिए जन्नत अनिवार्य हो जाती है। जिनकी प्रत्येक प्रशंसा करता है और यह बच्चा तो दीन की सेवा की एक विशेष भावना रखता था और सम्भवतः खेलों और हाईकिंग इत्यादि में भाग इस लिए लेता था कि स्वस्थ शरीर दीन की सेवा के लिए आवश्यक है। उसका जीवन परिचय लिखने वालों ने, उस प्यारे बच्चे के बारे में जो अभिव्यक्ति की है, ऐसी है कि जो उसके गुणों को प्रकट करती है।

प्रिय रज़ा सलीम जो हमारे दफ़तर प्राईवेट सैक्रेट्री के कारकुन सलीम ज़फ़र के बेटे थे। 10 सितम्बर 2016 इटली में हाईकिंग के समय एक दुर्घटना में वफ़ात पा गए, इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। यह 27 सितम्बर 1993 को गलफ़र्ड यू.के. में पैदा हुए थे। वक़्फ़-ए-नौ की तहरीक में शामिल थे। उनके परिवार में अहमदियत उनके पड़दादा मोहरम अलाह दीन के द्वारा आई जिनका सम्बंध क़ादियान के निकट के एक गाँव से था। उन्होंने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ी. के हाथ पर बैअत की थी। अज़ीज़ ने 2012 में जामिअः अहमदियः यू.के. में प्रवेश लिया। वे अपने परिवार में पहले मुरब्बी बन रहे थे और तीसरी कक्षा पास कर चुके थे तथा चौथी कक्षा में जाने वाले थे। मरहूम मूसी थे, वसीय्यत का फ़ॉर्म उन्होंने भर दिया था और कार्यवाही हो रही थी। मैंने कारपरदाज़ को लिक्खा कि उनकी वसीय्यत मंज़ूर है। माता-पिता के अतिरिक्त उनके दो बहनें और दो भाई भी हैं।

सलीम ज़फ़र साहब लिखते हैं कि मेरा बहुत ही प्यारा बेटा था, अनेक प्रतिभाओं का मालिक था। सदैव सच बोलता था यदि कोई ग़लती हो गई हो तो उसको छिपाता नहीं था, यदि डांट भी पड़े तो उसकी चिंता नहीं करता था। अपनी ग़लती को स्वीकार करना तथा सच पर क़ायम रहना, उसकी आदत में शामिल था। बच्चों से बड़ा प्यार करने वाला था, अपनी बहिन के बच्चों से बड़ा प्यार करता था। यदि वह बहिन बच्चों को डांटती तो यह इतना भावुक था कि स्वयं रो पड़ता था और यह कहा करता था कि बच्चों का सुधार मारने से नहीं हो जाता। दूसरों को चीज़ें देकर प्रसन्नता अनुभव करता था यदि कोई चीज़ खाने के लिए उसको देते कि हॉस्टल में जा रहे हो, यह रख लो, तो यदि वह वस्तु अधिक होती तो लेकर जाता कि मेरे साथी जो हैं उनको पूरी हो जाए, अन्यथा छोड़ जाता कि मैं छिप छिप पर खाने नहीं खा सकता। अपने दोस्तों के कपड़े भी, कहते हैं कि कई बार घर ले आता कि मेरे दोस्त के कपड़े हैं, इनको धोकर प्रैस कर दें। बहिन भाईयों से भी बड़ा प्यारा सम्बंध था। पूरे दायित्व से प्रत्येक के काम करता, अपने लिए तो चाहे हाथ रोक लेता था परन्तु अनावश्यक व्यय नहीं करता था। हाथ बहुत खुला था और वसीय्यत भी, जैसा कि मैंने कहा, उसकी अल्लाह के फ़ज़्ल से मंज़ूर हो गई है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम तथा ख़िलाफ़त से बड़ा प्रेम था और इसके विरुद्ध कभी कोई बात नहीं सुनता था और बात सुनकर कभी चुप नहीं रहता था। बड़ा संतोषी था, कभी मांगता नहीं था इस लिए हमें उसकी आवश्यकताओं को स्वयं ही ध्यान रखना पड़ता था। पढ़ाई के विषय में सदैव उन लड़कों की जो यू.के. से बाहर के थे, इंगलिश में बड़ी सहायता किया करता था। क्रोध नाम की तो कोई चीज़ उसमें थी ही नहीं, सदा उसको हंसते मुस्कुराते देखा, प्रत्येक ने यही लिक्खा है। नमाज़ का बड़ा पाबन्द था।

उनके वालिद साहब लिखते हैं कि मानचिस्टर वक़्फ़-ए-आरज़ी पर गया हुआ था। जिस दिन वापस आना था वहाँ से किसी ने एक लिफ़ाफ़ा उसकी जेब में डाल दिया। उसने उसे खोला तो देखा उसमें कुछ रक़म थी। रज़ा ने धन्यवाद करते हुए वापस कर दिया और कहा कि अंकल, हमें यह लेना मना है। उसी व्यक्ति ने कुछ दिन बाद मुझे पत्र लिक्खा कि एक छोटा बच्चा जो मुरब्बी बन रहा है वह यहाँ आया था और हमें चकित कर गया। यदि ऐसे बच्चे मुरब्बी बनेंगे तो निःसन्देह जमाअत में रूहानी बदलाव आएगा।

उनकी माता जी लिखती हैं कि मेरा बेटा अपने माता-पिता तथा जमाअत का आज्ञाकारी था उसका प्यार का ढंग बड़ा अनोखा था। ध्यान रखने योग्य बात मानने वाला, प्रत्येक छोटे से छोटे मामले में बड़े अच्छे ढंग से बात करता, छोटों और बड़ों से बड़े प्यार से पेश आता, मेरे घर के कामों में सहायोग करता। थोड़ी थोड़ी देर बाद पूछता कि आप थक गईं हैं कोई मदद करूँ। कभी मुझे परेशान नहीं देख सकता था और यही कहता था कि आपकी आँखों में आँसू नज़र न आएँ। जामिअः से वापस आते ही घर में सब लोगों को पूछता और पूरे सप्ताह सब कैसे रहे, सबको बड़े ध्यान पूर्वक पूछता। छोटा था, तो उस समय जब हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रह. इस्लामाबाद जाया करते थे तो स्कूल से आते ही भाग जाता था कि मैं हुज़ूर से मिलने जा रहा हूँ और साथ सैर भी करनी है। डा. नुसरत जहाँ साहिबा, रबवा की जो हैं आजकल यहाँ काफ़ी बीमार हैं। अल्लाह तआला उनको स्वस्थ भी करे, उनके घर से घनिष्ट सम्बंध था। वह कहा करता था कि मैं उनके लिए बड़ी दुआ करता हूँ। अल्लाह तआला उसकी दुआएँ भी उनके लिए क़बूल करे। ये लिखती हैं कि मैंने जुम्अः की रात को सपने में देखा कि मेरे घर बहुत लोग आ रहे हैं तथा बहुत फ़ोटो बन रहे हैं। मैं डर कर उठी और अपने पति से कहा कि मुझे सपना आया है जिसके कारण मैं डर गई हूँ मुझे इस सपने का अच्छा प्रभाव नहीं लगता तो सवेरा होते ही सदक़ा कर दें। उन्होंने कहा कि दफ़्तर जाऊँगा तो दान कर दूँगा परन्तु इससे पहले ही यह दुखद सूचना आ गई। वालिदः कहती हैं कि जब भी मैं कोई कपड़ा लाकर देती तो आराम से पहन लेता और बड़ी प्रशंसा करता। मेहमानदारी में तो बहुत ही बढ़ा हुआ था यदि कोई एक बार उसकी दावत कर देता तो फिर भूलता नहीं था और जब कहीं वे मिलते अथवा इस्लामाबाद आते तो तुरन्त घर आकर कहता कि अमुक अमुक लोग आए हुए हैं, खाना बनाएँ उनको खाने पर बुलाएँ।

जमाअत के निज़ाम के प्रत्येक छोटे से छोटे आदेशानुसार काम करने का प्रयास करता। एब बार मुझे कहा कि अम्मी, मेरा दिल करता है कि जमाअत की बहुत तबलीग़ करूँ और इतने अहमदी बनाऊँ कि आपको मुझपर गर्व हो।

उनकी बहिन रफ़ीअः साहिबा कहती हैं- बड़ा ही प्यारा भाई था, छोटा था परन्तु उसके विचार बड़े गम्भीर थे। छोटा होकर सबका ध्यान रखने वाला तथा प्रत्येक आयु के लोगों के साथ, उनकी आयु के अनुसार बात करता और आज तक कभी उसने किसी का दिल नहीं दुखाया। प्रत्येक बात को बड़े ध्यान से सुनता तथा बड़े आदर के साथ जवाब देता। उसके भाई असद सलीम कहते हैं कि बड़े सरल स्वभाव का मालिक था, साफ़ और सीधी बात करता। हमने अभी कुछ दिनों पहले एक नई गाड़ी ख़रीदकर दी। कहते हैं- सबसे पहली बात जो अज़ीज़म ने इस गाड़ी के विषय में पूछी वह उसका मूल्य था और कहा कि मुरब्बी के रूप में मुझे सादा जीवन व्यतीत करना चाहिए तथा बहुमूल्य वस्तुएँ नहीं लेनी चाहिएँ। उनकी बहिन अम्तुल हफ़ीज़ साहिबा लिखती हैं- एक प्रतिभा उसमें यह थी कि किसी व्यक्ति की बुराई सुनना पसन्द नहीं करता था और उसमें यह विशेषता थी कि लोगों के नकारात्मक विचारों को अच्छे रंग में बदल देता था। उसका कहना यही होता था कि हमें लोगों की अच्छाईयों पर नज़र रखनी

चाहिए तथा उनके दोषों के विषय में बात करने के बजाए उनके लिए दुआ करनी चाहिए। स्वभाव में सादगी का एक उदाहरण यह है कि वालिदः साहिबा उसको ईद पर नए कपड़े ख़रीद कर देतीं तो वे कपड़े पहन कर बड़ा चिंतित रहता कि कहीं इन कपड़ों में अनावश्यक सजावट और दिखावा न हो जाए इस लिए उनपर अपनी कोई पुरानी चीज़ जैकिट इत्यादि पहन लेता।

क़ुद्दूस साहब, उस्ताद जामिअः अहमदियः कहते हैं कि बड़ा बुद्धिमान विद्यार्थी था। कक्षा में सबसे आगे Attentively बैठता और सदैव मुस्कुराकर बात करता। मुझे याद नहीं है कि कभी किसी प्रकार के क्रोध को प्रकट किया हो बल्कि दूसरों की सहायता करने का भी शौक़ था परन्तु यदि स्कोर आदि देखना होता तो सदैव टीचर से पूछ कर जाता। ज़हीर ख़ान साहब जामिअः अहमदियः के अध्यापक हैं, वे भी लिखते हैं कि पिछले दो वर्षों से अज़ीज़म रज़ा की कक्षा लेना की तौफ़ीक़ पा रहा था। इस विनीत ने इस बच्चे में विशेष प्रतिभा यह देखी थी कि जो काम उसके हवाले किया जाता उसे वह बड़ी लगन, परिश्रम तथा दायित्व के साथ करता। कई बार मैंने देखा कि उस काम पर नियुक्त अन्य बच्चे यदि इधर उधर चले गए हैं तो यह अकेला उस काम को पूरा कर रहा होता था। रज़ा सलीम की एक बड़ी प्यारी आदत थी कि कभी अनावश्यक प्रश्न नहीं पूछता था और जब कभी प्रश्न पूछता तो वे सामान्यतः पश्चिमी दुनया में इस्लाम और अहमदियत के बारे में होने वाली आपत्तियों पर आधारित होते थे और कई बार बताता कि उसकी किसी ग़ैर मुस्लिम अथवा ग़ैर अहमदी दोस्त से बात हुई है और उसने यह सवाल पूछा था। मानो अल्लाह तआला ने उसके दिल में इस्लाम और अहमदियत की प्रतिरक्षा तथा उनपर होने वाली आपत्तियों के उत्तर देने की एक ज्योत जला रक्खी थी। इसी प्रकार वहाँ के अध्यापक सय्यद मशहूद अहमद लिखते हैं कि गतवर्ष अन्ताक्षरी में भाग लेने के लिए अज़ीज़म ने लगभग पाँच सौ से अधिक काव्य पंक्तियाँ याद की थीं और यह प्रतिभा बड़ी विशेष थी कि पंक्तियों को याद करने से पूर्व उनका मूल अर्थ समझा करता था। कहते हैं- रज़ा सलीम को तबलीग़ का बड़ा शौक़ था। पिछले वर्ष अज़ीज़म को वक़्फ़-ए-आरज़ी के लिए वल्वर हैम्पटन की जमाअत में भिजवाया गया जहाँ अज़ीज़म ने लीफ़ लैट्स बांटने के अतिरिक्त जमाअत के स्थानीय लोगों के साथ मिलकर कई तबलीग़ी स्टाल भी लगाए और इस बीच उनकी भेंट एक अंग्रेज़ से हुई जो धर्म की दृष्टि से एक सक्रिय ईसाई था। अज़ीज़म ने जब उन्हें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा वर्णित अनुसंधान के प्रकाश में हज़रत मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम के सलीब से मुक्ति पाने तथा कशमीर की ओर प्रस्थान करने के बारे में बताया तो वह बड़ा चकित हुआ। इसी प्रकार मंसूर ज़िया साहब, अध्यापक हैं जामिअः के, लिखते हैं कि अज़ीज़म की रग रग में ख़िलाफ़त से प्रेम तथा उसके लिए स्वाभिमान कूट कूट कर भरा हुआ था। कहते हैं- जब भी मैंने कक्षा में जुम्अः के ख़ुत्बों के विषय में चर्चा की तथा कोई निरीक्षण किया ख़ुत्बे के संदर्भ में, तो अज़ीज़म को बहुत सी बातें याद होती थीं, बड़े ध्यान पूर्वक ख़ुत्बः सुनने वाला था।

भावार्थ यह है कि असंख्य वृत्तांत लोगों ने मुझे लिक्खे हैं। अल्लाह तआला मरहूम के दर्जे बुलन्द फ़रमाए तथा अपने प्यारों के चरणों में स्थान दे। वह बच्चा जैसा कि मैंने पहले भी कहा कि जामिअः पास करने से पहले ही बेहतरीन मुरब्बी तथा बेहतरीन मुबल्लिग़ था और ख़िलाफ़त के प्रति अत्यधिक स्वाभिमान रखने वाला था। अल्लाह तआला दुनया के समस्त जामिअः के विद्यार्थियों को यह सामर्थ्य प्रदान करे कि वे भी श्रद्धा और आज्ञा पालन में बढ़ने वाले हों और दायित्वों को अदा करने वाले हों। अज़ीज़म के दोस्त केवल उसकी विशेषताएँ बयान करने वाले न हों बल्कि दोस्ती का हक़ तो यह है कि उसे अब इस प्रकार अदा करें कि उसकी विशेषताएँ अपनाकर अपनी सम्पूर्ण योग्यताएँ दीन की सेवा हेतु उपयोग करें और मुझे भी तथा भविष्य में आने वाले ख़लीफ़ाओं को भी सदैव उत्तम सहायक तथा सुलतान-ए-नसीर मिलते रहें। अल्लाह तआला वालिदैन को भी और बहिन भाईयों को भी संतोष प्रदान करे और जिस संतोष और अल्लाह तआला की इच्छा पर प्रसन्न रहते हुए इन लोगों ने अभिव्यक्ति की है उस पर सदैव ये क़ायम भी रहें तथा अल्लाह तआला की कृपाओं को प्राप्त करने वाले हों और भविष्य में प्रत्येक परीक्षा तथा कठिनाई से अल्लाह तआला इन सबको बचाए। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- नमाज़ के पश्चात इन्शाअल्लाह जनाज़े की नमाज़ होगी। जनाज़ह हाज़िर है। मैं बाहर जाकर जनाज़ा पढ़ाऊँगा, दोस्त यहीं अपनी सफ़ें व्यवस्थित कर लें।